पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़

(छ,ग, भासन के अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा स्थापित)
कोनी – बिरकोना मार्ग, बिलासपुर (छ,ग,) 495009 दूरभाष क्रमांक : (07752) 240715
www.pssou.ac.in E-mail-registar@pssou.ac.in

पाठ्यक्रम

बी.ए.

समाजशास्त्र

VERIFIED

REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

बी.ए. प्रथम वर्ष
समाजशास्त्र का परिचय
(प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड (1)

अध्याय 1 : समाजशास्त्र का अर्थ

समाजशास्त्र का अर्थ, समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र, समाजशास्त्र की विषय वस्तु, समाजशास्त्र की प्रकृति

अध्याय 2 : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

परिप्रेक्ष्य का अर्थ, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का अर्थ, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, समाजशास्त्र का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध

अध्याय 3 : समाजशास्त्रीय अध्ययनों का वैज्ञानिक और मानविकी अभिमुखन

अभिमुखन का अर्थ, समाजशास्त्रीय अभिमुखन, समाजशास्त्रीय अभिमुखन के प्रकार, वैज्ञानिक अभिमुखन, वैज्ञानिक अभिमुखन का विकास, मानवतावादी अभिमुखन, मानवतावादी अभिमुखन का अर्थ, मानतावादी अभिमुखन का विकास

अध्याय 4 : मौलिक अवधारणाएँ

समाज का अभिप्राय, समाजशास्त्र में समाज का अर्थ, समाज की विशेषताएँ, सामाजिक सम्बन्धों की मनोवैज्ञानिक स्थिति, समाज की अन्य विशेषताएँ, समाज तथा एक समाज में अन्तर

खण्ड (2)

अध्याय 5 : समुदाय एवं समिति

समुदाय की संकल्पना, समुदाय का अर्थ एवं परिभाषाएँ, समुदाय के आधार या आवश्यक तत्व, समुदाय की विशेषताएँ, समुदाय के प्रकार, सीमावर्ती समुदायों के उदाहरण, समिति की संकल्पना, समिति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, समिति की विशेषताएँ, समिति के कुछ उदाहरण

अध्याय 6 : संस्थाएँ

संस्था का अर्थ एवं परिभाषाएँ, संस्था की उत्पत्ति एवं विकास, संस्था की विशेषताएँ, संस्था के कार्य

अध्याय 7 : सामाजिक समूह

सामाजिक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ, समूह निर्माण के तत्व, सामाजिक समूह की विशेषताएँ, समूह का अर्थ, समूहों का वर्गीकरण, प्राथमिक समूह का अर्थ तथा परिभाषाएँ, प्राथमिक समूहों की विशेषताएँ, प्राथमिक समूहों का महत्व, द्वितीयक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ, द्वितीयक समूह की विशेषताएँ, द्वितीयक समूह का महत्व, सामाजिक संरचना, सामाजिक संरचना का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक संरचना की विशेषताएँ, सामाजिक संरचना के तत्व

अध्याय 8 : प्रस्थिति एवं भूमिका

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

प्रस्थिति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक प्रस्थिति के प्रकार, अर्जित प्रस्थिति, अर्जित प्रस्थिति के आधार, भूमिका का अर्थ एवं परिभाषाएँ, भूमिका की विशेषताएँ, प्रस्थिति एवं भूमिका में सम्बन्ध, प्रस्थिति एवं भूमिका का समाजशास्त्रीय महत्व

अध्याय 9 : परिवार एवं नातेदारी

परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, परिवार की विशेषताएँ, संयुक्त परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, संयुक्त परिवार के लाभ, संयुक्त परिवार के दोष, संयुक्त परिवार के विघटन के कारण, संयुक्त परिवार के प्रकार, संयुक्त परिवार में हो रहे परिवर्तन, केन्द्रीय परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, केन्द्रीय परिवार के लक्षण, केन्द्रीय परिवार के लाभ, केन्द्रीय परिवार के कार्य, नातेदारी का अर्थ एवं परिभाषाएँ, नातेदारी के प्रकार, नातेदारी की श्रेणियाँ, नातेदारी की रीतियाँ

अध्याय 10 : धर्म

धर्म का अर्थ एवं परिभाषाएँ, धर्म की प्रमुख विशेषताएँ, सामाजिक नियंत्रण में धर्म की भूमिका, शिक्षा का अर्थ एंव परिभाषाएँ, सामाजिक नियन्त्रण में शिक्षा की भूमिका, शिक्षा के प्रकार या स्वरूप, राज्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ, राज्य के मौलिक तत्व, राज्य के कार्य, सामाजिक नियंन्त्रण में राज्य की भूमिका, जाति तथा राजनीति, जाति का अर्थ, जाति का राजनीतिक स्वरूप, जाति तथा राजनीति में अन्त:क्रिया, दबाव समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ, दबाव समूह की विशेषताएँ, भारत में प्रमुख दबाव समूह, राजनीतिक दलों का प्रमुख कार्य, दबावकारी समूह का अर्थ, राजनीतिक दलों तथा दबावकारी समूहों में अन्तर, भारतीय दबाव समूहों की विशेषताएँ

खण्ड (3)

अध्याय 11 : व्यक्ति एवं समाज

व्यक्ति तथा समाज का सम्बन्ध, व्यक्ति की समाज पर निर्भरता, मनुष्य पर समाज का प्रभाव, समाजीकरण, समाजीकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ, समाजीकरण की प्रक्रिया, समाजीकरण की विशेषताएँ, समाजीकरण की प्रमुख संस्थाएँ, व्यक्ति का समाजीकरण करने संस्थाएँ, संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, संस्कृति की विशेषताएँ, संस्कृति के प्रकार, संस्कृति का सामाजिक जीवन में महत्व, सभ्यता का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक नियंत्रण-प्रतिमान, मूल्य एवं मान्यताएँ, सामाजिक नियंत्रण की विशेषताएँ, सामाजिक नियंत्रण के उद्देश्य, सामाजिक नियंत्रण के अभिकरण के रूप में सामाजिक मूल्य की भूमिका, मूल्यों का महत्व

अध्याय 12 : सामाजिक स्तरीकरण एवं गतिशीलता

सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक स्तरीकरण की प्रमुख विशेषताएँ, सामाजिक स्तरीकरण के आधार, सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप, सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धान्त, सामाजिक स्तरीकरण के कार्य एवं महत्व, सामाजिक स्तरीकण के दोष, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक गतिशीलता के स्वरूप, सामाजिक गतिशीलता की मात्रा

अध्याय 13 : सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषाएँ

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ, सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख प्रतिमान, सामाजिक परिवर्तन तथा सांस्कृतिक परिवर्तन में अन्तर, सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारक, जनसंख्यात्मक कारक का अर्थ, जनसंख्या तथा सामाजिक परिवर्तन, जनसंख्यात्मक कारकों के प्रभाव का मूल्यांकन, सामाजिक परिवर्तन के सांस्कृतिक कारक, सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-1
PSSOU, CG Bilaspur

खण्ड (4)

अध्याय 14 : व्यावहारिक समाजशास्त्र का परिचय : समाजशास्त्र तथा सामाजिक समस्याएँ

व्यावहारिक समाजशास्त्र का अर्थ, व्यावहारिक समाजशास्त्र के उद्देश्य, व्यावहारिक समाजशास्त्र का योगदान, सामाजिक समस्या के तत्व एवं विशेषताएँ, सामाजिक समस्याओं के कारण, सामाजिक समस्याओं का समाधान, सामाजिक समस्याओं के निराकरण में बाधाएँ, सामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन, सामाजिक परिवर्तन की दिशा तथा सामाजिक समस्याएँ, सामाजिक समस्याएँ तथा समाजशास्त्र, सामाजिक समस्याएँ तथा वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, सामाजिक समस्याएँ तथा मानविकी परिप्रेक्ष्य

अध्याय 15 : उद्‌विकास तथा प्रगति

सामाजिक उद्‌विकास, सामाजिक उद्‌विकास की विशेषताएँ, सामाजिक उद्‌विकास के सिद्धान्त, सामाजिक उद्‌विकास के कारक, मानव समाज का उद्‌विकास, सामाजिक प्रगति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक प्रगति के लक्षण, प्रगति की दशाएँ, सामाजिक प्रगति की कसौटियाँ, उद्‌विकास तथ प्रगति में अन्तर, परिवर्तन तथा प्रगति

अध्याय 16 : समाजशास्त्र तथा सामाजिक विकास

समाजशास्त्र एवं विकास, समाजशास्त्र, सामाजिक नीति एवं क्रियान्वयन, नीतियों का क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

भारतीय समाज
(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड (1)

अध्याय 1 : वर्ण

वर्ण का अर्थ, वर्ण-व्यवस्था की उत्पत्ति, वर्ण-व्यवस्था का आधार-जन्म अथवा कर्म, विभिन्न वर्णों के कर्त्तव्य (धर्म), वर्ण-व्यवस्था का महत्व, वर्ण-व्यवस्था के दोष

अध्याय 2 : आश्रम

आश्रम का अर्थ, आश्रम-व्यवस्था की उत्पत्ति, आश्रमों का विभाजन, ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम, आश्रमों का महत्व, आश्रम व्यवस्था के आधार भूत सिद्धान्त, आश्रम व्यवस्था का समाजशास्त्रीय महत्व

अध्याय 3 : कर्म

कर्म का अर्थ, कर्म तथा पुनर्जन्म का सिद्धान्त, कर्म और भाग्य, कर्म के सिद्धान्त का महत्व, कर्म सिद्धान्त के दोष

अध्याय 4 : धर्म

धर्म का अर्थ एवं परिभाषाएँ, धर्म के विविध रूप, हिन्दू धर्म और परिवर्तन

खण्ड (2)

अध्याय 5 : क्षेत्र-कार्य दृष्टि

क्षेत्रीय कार्य दृष्टि से तात्पर्य, ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता के उत्तरदायी कारण, भारत में किये गये क्षेत्रीय अध्ययनों के मुख्य विषय, क्षेत्र कार्य दृष्टि से किये गये क्षेत्रीय अध्ययनों का महत्व, शास्त्रीय दृष्टि तथा क्षेत्र कार्य दृष्टि का महत्व तथा अन्तः सम्बन्ध

अध्याय 6 : भारतीय समाज की संरचना एवं संयोजन गाँव एवं कस्बे

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

गाँव का अर्थ एवं परिभाषाएँ, गाँव की विशेषताएँ, भारतीय गाँव एक इकाई के रूप में, गाँवों के प्रकार, भारतीय गाँवों की सामाजिक संरचना, कस्बा की परिभाषा, कस्बा की विशेषताएँ

अध्याय 7 : नगर और ग्रामीण-नगरीय अनुबन्ध

नगर की अवधारणा, नगर का अर्थ एवं परिभाषाएँ, नगर (नगरीय समुदाय) की विशेषताएँ, भारत में नगर एवं नगरीकरण, नगरीय सामाजिक संरचना, भारतीय नगरीय समुदायों के संगठनात्मक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू, गाँव एवं नगर में पारस्परिक अन्तः क्रियाः अनुबन्ध

अध्याय 8 : जनजातियाँ

जनजाति की परिभाषा, जनजाति की विशेषताएँ, भारतीय जनजातियों का वर्गीकरण, भारत में जनजातियों का विवाह, विवाह के रूप, जीवन साथी चुनने के तरीके, जनजातियों में विवाह-विच्छेद, जनजातीय परिवार

अध्याय 9 : दलित

कमजोर वर्ग की अवधारणा, दलितों वर्ग, दलितों की निर्योग्यताएँ, दलितों का कल्याणः संवैधानिक व्यवस्थाएँ, दलितों अथवा अनुसूचित जातियों की वर्तमान समस्याएँ, अस्पृश्यता के सामाजिक दुष्परिणाम, अस्पृश्यता उन्मूलन में सरकार के प्रयत्न, अस्पृश्यता अधिनियम, 1955, अनुसूचित जातियों की वर्तमान स्थितिः एक मूल्यांकन, अस्पृश्यता निवारण के लिए सुझाव

अध्याय 10 : महिलाएँ

विभिन्न युगों में नारी की स्थिति, स्वतन्त्रता से पूर्व स्त्रियों की स्थिति, हिन्दू स्त्रियों की निम्न स्थिति के कारण, स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् महिलाओं की स्थिति, परिवर्तन के कारण, हिन्दू और मुस्लिम स्त्रियों की स्थिति की तुलना, स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के लिए किए गए सरकारी प्रयास, प्रौढ़ महिलाओं के लिए कल्याण कार्यक्रम

अध्याय 11 : अल्पसंख्यक

अल्पसंख्यकों से अभिप्राय, भारत में अल्पसंख्यकों की श्रेणियाँ, भारत में धार्मिक अल्पसंख्यक, ईसाई अल्पसंख्यक, सिक्ख अल्पसंख्यक, भारत में भाषा पर आधारित अल्पसंख्यक, अल्पसंख्यकों की समस्याओं के समाधान हेतु सरकार द्वारा उठाये गये कदम, जनजातीय अल्पसंख्यक, जनजातीय समस्याएँ, जनजातीय कल्याण-कार्य

खण्ड (3)

अध्याय 12 : जाति व्यवस्था

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

जाति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, जाति की विशेषताएँ, जाति व्यवस्था के प्रकार्य, जाति व्यवस्था का महत्व, जाति प्रथा की हानियाँ, जाति प्रथा की उत्पत्ति के सिद्धान्त, जाति व्यवस्था में परिवर्तन, जाति व्यवस्था में परिवर्तन के कारण, जाति प्रथा वर्ग में अन्तर, जाति और राजनीति, जाति व्यवस्था की वर्तमान संरचना, जाति का भविष्य

अध्याय 13 : नातेदारी

नातेदारी का अर्थ एवं परिभाषाएँ, नातेदारी के भेद, नातेदारी की श्रेणियाँ, सम्बन्ध संज्ञाएँ, नातेदारी की रीतियाँ, परिहार या विमुखता, परिहास के सम्बन्ध, भारत में नातेदारी व्यवस्था में क्षेत्रीय भिन्नताएँ, उत्तर और दक्षिण भारत की नातेदारी में तुलना, नातेदारी का समाजशास्त्रीय महत्व, नातेदारी व्यवस्था में परिवर्तन या बदलाव

अध्याय 14 : परिवार

परिवार की विशेषताएं, परिवार के प्रकार, परिवार के प्रमुख कार्य, भारतीय परिवार की विशेषताएँ, संयुक्त परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, संयुक्त परिवार के लक्षण, संयुक्त परिवार की रचना, संयुक्त परिवार के कार्य, भारतीय संयुक्त परिवार की संरचना, संयुक्त परिवार के गुण, संयुक्त परिवार के दोष

अध्याय 15 : विवाह के बदलते आयाम

विवाह की अवधारणा, विवाह का सामान्य अर्थ एवं परिभाषाएँ, हिन्दू विवाह के उद्देश्य, हिन्दू विवाह की प्रकृति एवं विशेषताएँ, विवाह के भेद, हिन्दू विवाह की विधियाँ, हिन्दू विवाह के नियम, हिन्दू विवाह का बदलता स्वरूप, मुसलमानों में विवाह, मुस्लिम विवाह की विशेषताएँ, ईसाइयों में विवाह, ईसाई विवाह में आधुनिक परिवर्तन

खण्ड (4)

अध्याय 16 : दहेज

दहेज का वास्तविक अर्थ, दहेज का परिभाषा, दहेज का इतिहास, दहेज अथवा दहेज-प्रथा के कारण, दहेज अथवा देहज-प्रथा के दुष्परिणाम, दहेज प्रथा खत्म करने के उपाय, दहेज प्रथा समाप्ति के कानूनी प्रयास

अध्याय 17 : घरेलू हिंसा

घरेलू हिंसा का अर्थ एवं परिभाषाएँ, घरेलू हिंसा के प्रकार, हिंसा की शिकार महिलाओं की विशेषताएँ, पारिवारिक हिंसा के अपराधकर्ता की विशेषताएँ,

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

घरेलू हिंसा के कारण, सरकार द्वारा घरेलू हिंसा को रोकने के प्रयत्न, घरेलू हिंसा को रोकने के उपाय

अध्याय 18 : विवाह-विच्छेद

तलाक या विवाह-विच्छेद की अवधारणा, विवाह-विच्छेद में वृद्धि के कारण, विवाह-विच्छेद के प्रकार्यात्मक पक्ष, विवाह-विच्छेद के अकार्यत्मक पक्ष, हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955, विवाह-विच्छेद के आधार

अध्याय 19 : अन्तः तथा अन्तर पीढ़ी संघर्ष

अन्तः पीढ़ी संघर्ष का अर्थ एवं परिभाषाएँ, अन्तः पीढ़ी संघर्ष के कारण, अन्तर-पीढ़ी संघर्ष का अर्थ एवं परिभाषाएँ, अन्तर-पीढ़ी संघर्ष के विभिन्न क्षेत्र, अन्तर-पीढ़ी संघर्ष के कारण, अन्तर-पीढ़ी संघर्ष को दूर करने के उपाय

अध्याय 20 : बुजुर्गों की समस्याएँ

बुजुर्गों (वृद्धों) की वर्तमान स्थिति, बुजुर्गों की प्रमुख समस्याएँ, बुजुर्गों की समस्याओं के कारण, बुजुर्गों के लिए कार्यक्रम एवं सरकारी नीति, बुजुर्गों की समस्याएँ दूर करने हेतु उपाय

अध्याय 21 : जातिवाद

जातिवाद का अर्थ एवं परिभाषाएँ, जातिवाद के विकास के कारक, जातिवाद के दुष्परिणाम, जातिवाद के निराकरण के उपाय, जातिवाद के निराकरण हेतु किये गये प्रयत्न, जाति और जातिवाद में अन्तर

अध्याय 22 : क्षेत्रवाद

क्षेत्रवाद का अर्थ एवं परिभाषाएँ, क्षेत्रवाद की प्रमुख विशेषताएँ, क्षेत्रवाद की समस्या के उदय के कारक, क्षेत्रवाद के प्रमुख दुष्परिणाम, क्षेत्रवाद को रोकने के उपाय

अध्याय 23 : सम्प्रदायवाद

राष्ट्रीय एकीकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ, राष्ट्रीय एकीकरण के मुख्य आधार, भारत में राष्ट्रीयता का उदय, साम्प्रदायिकता अथवा सम्प्रदायवाद का अर्थ एवं परिभाषा, साम्प्रदायिकता अथवा सम्प्रदायवाद की विशेषताएँ, साम्प्रदायिकता के कारण, साम्प्रदायिकता के दुष्परिणाम, साम्प्रदायिकता के निवारण हेतु सुझाव

अध्याय 24 : भ्रष्टाचार एवं युवाओं में अशान्ति

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

भ्रष्टाचार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, भ्रष्टाचार की विशेषताएँ, भ्रष्टाचार के कारण, भ्रष्टाचार के स्वरूप, भ्रष्टाचार के दुष्परिणाम, भ्रष्टाचार उन्मूलन: प्रयत्न एवं सुझाव

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

बी. ए. द्वितीय वर्ष
समाज और अपराध

प्रथम प्रश्नपत्र

खण्ड (1)

अध्याय– 1 अपराध : अवधारणा एवं कारण

अपराध की अवधरणा, अपराध की परिभाषाएँ, अपराध के लक्षण या विशेषताएँ, अपराध का वर्गीकरण, अपराध का उत्तरदायित्व, व्यक्ति – उत्तरदायी, समाज – उत्तरदायी, अपराध के सामान्य कारण

अध्याय– 2 अपराध के प्रकार

अपराध का अर्थ एवं परिभाषाएँ, ग्रामीण अपराध, ग्रामीण अपराध के कारण, नगरीय अपराध, नगरीय अपराध के कारण, बाल अपराध, अपराध और बाल अपराध में अन्तर, बाल अपराध के कारण, भारत में सामाजिक समस्या के रूप में बाल–अपराध, सामाजिक विघटन बनाम सामाजिक स्थिरता

अध्याय– 3 अपराध के सम्प्रदाय

पूर्व–शास्त्रीय सम्प्रदाय, शास्त्रीय सम्प्रदाय, नवशास्त्रीय सम्प्रदाय, साकारवादी सम्प्रदाय, मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय, आधुनिक अवधारण

खण्ड (2)

अध्याय– 4 सामाजिक संरचना एवं अप्रतिमानता

सामाजिक संरचना, संरचना का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक संरचना की प्रक्रिया, वाल्ट डब्ल्यू रोस्टोव का सिद्धांत, अप्रतिमानता की अवधरणा, अप्रतिमानता की परिभाषाएँ, अप्रतिमानता की विशेषताएँ, अप्रतिमानता के कारण, अप्रतिमानता को रोकने के उपाय, अप्रतिमानता का समाजशास्त्रीय महत्व

अध्याय– 5 आत्महत्या

आत्महत्या का अर्थ, भारत में आत्महत्याएँ, आत्महत्या के सिद्वान्त, आत्महत्या के कारण, आत्महत्या की रोकथाम

अध्याय– 6 संगठित अपराध

अपराध की कानूनी अवधरणा, अपराध की परिभाषाएँ, अपराधें का सामान्य वर्गीकरण, अपराधियों का वर्गीकरण, अपराध के सिद्वान्त, अपराध के कारक, भारत में अपराध–निरोध, अपराध तथा अपराधियों के बदलते स्वरूप, अपराध और अपराधियों के नये प्रतिमान

अध्याय– 7 श्वेत–वसन अपराध

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

श्वेत– वसन अपराध की परिभाषाएँ, श्वेत– वसन अपराध की विशेषताएँ, श्वेत– वसन अपराध के प्रमुख रूप, श्वेत–वसन अपराध के कारण, श्वेत–वसन अपराध के परिणाम, श्वेत– वसन अपराध को रोकने के सुझाव

अध्याय– 8 आतंकवाद

आतंकवाद की अवधरणा, आतंकवाद के प्रकार, भारत एवं विश्व में आतंकवाद की समस्या, आतंकवाद के कारण, आतंकवाद के दुष्परिणाम, आतंकवाद को दूर करने के प्रयत्न एवं सुझाव

अध्याय– 9 सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ अथवा स्वरूप, सामाजिक परिवर्तन का रेखीय सिद्वान्त, सामाजिक परिवर्तन का चक्रीय सिद्वान्त, सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान, सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्कृतिक परिवर्तन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन में अन्तर, सामाजिक परिवर्तन के सामान्य कारक

अध्याय– 10 भारत में सामाजिक परिवर्तन

भारत में, सामाजिक परिर्वतन, सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन, सामाजिक मूल्यों एवं मनोवृत्तियों में परिवर्तन, लोकतात्रिाक संरचना तथा सामाजिक परिवर्तन, भारत में सामाजिक परिवर्तन के कारक

खण्ड (3)

अध्याय– 11 भारत में अपराध

भारत में अपराध के कारण, सामाजिक दशाएँ और प्रथाएँ, विवाह के आधार में परिवर्तन, जातिप्रथा और जातिवाद, जनसंख्या की समस्या, आर्थिक दशाएँ, विलासी साहित्य, चल–चित्र, शिक्षा, फैशन

अध्याय– 12 सामाजिक विघटन

सामाजिक विघटन की अवधरणा, सामाजिक विघटन की परिभाषाएँ, सामाजिक विघटन के लक्षण, सामाजिक विघटन एक प्रक्रिया है, सामाजिक विघटन के कारण, सामाजिक विघटन के परिणाम, सामाजिक विघटन का समाज पर प्रभाव, सामाजिक विघटन के सिद्धांत

अध्याय– 13 मद्यपान

मद्यपान की परिभाषा, मद्यपान की प्रकृति, नशीली दवाओं के सामान्य प्रभाव, मद्यपान के प्रभाव, मद्यनिषेध के प्रयत्न, मद्यनिषेध की समस्याएँ और कठिनाइयाँ, मद्यनिषेध से लाभ

अध्याय– 14 मादक द्रव्य–व्यसन

मद्यपान का अर्थ, मादक द्रव्य–व्यसन का अर्थ, मादक द्रव्य–व्यसन के कारण, मादक द्रव्य– व्यसन के दुष्परिणाम, समस्या के समाधन हेतु सुझाव, भारत में नशा–निषेध

अध्याय– 15 भिक्षावृत्ति

भिक्षावृत्ति की परिभाषाएँ, भिखारियों का वर्गीकरण, भिक्षावृत्ति के कारण, भिक्षावृत्ति उन्मूलन के सुझाव, भिक्षावृत्ति निवारण कानून (1961)

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

खण्ड (4)

अध्याय– 16 दण्ड

दण्ड की परिभाषाएँ, दण्ड के उददेश्य, आदर्श दण्ड पद्वति की विशेषताएँ

अध्याय– 17 दण्ड के प्रमुख सिद्धांत

प्रायश्चित का सिद्वान्त, प्रतिशोधत्मक का सिद्वान्त, प्रतिरोधात्मक सिद्वान्त, निरोधत्मक सिद्धांत सुधरात्मक सिद्वान्त, सुधरात्मक सिद्धांत की आलोचना

अध्याय– 18 प्रोबेशन और पैरोल

प्रोबेशन की परिभाषाएँ, प्रोबेशन के उद्देश्य, प्रोबेशन हेतु योग्यताएँ, प्रोबेशन की दशाएँ, प्रोबेशन के लाभ, प्रोबेशन के दोष, पैरोल, पैरोल की परिभाषाएँ, पैरोल की विशेषताएँ, पैरोल की दशाएँ, पैरोल के लाभ, पैरोल के दोष

अध्याय– 19 भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार का अर्थ, भारत में भ्रष्टाचार की समस्या, राजनीतिज्ञों में भ्रष्टाचार, सरकारी सेवाओं में भ्रष्टाचार, व्यापारियों में भ्रष्टाचार, व्यवसायियों में भ्रष्टाचार, धार्मिक जीवन में भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार के कारण, भ्रष्टाचार के दुष्परिणाम, भ्रष्टाचार उन्मूलन : प्रयत्न एवं सुझाव

अध्याय– 20 पुलिस

पुलिस की परिभाषा, पुलिस का ऐतिहासिक उद्विकास, भारतीय पुलिस कार्यात्मक संगठन, अपराध नियंत्रण में पुलिस की भूमिका, पुलिस की असफलता के कारण, सफलता के लिए सुझाव

अध्याय– 21 बन्दीगृह

बन्दीगृह की परिभाषाएँ, बन्दीगृह के तत्व, बन्दीगृह के उद्देश्य, बन्दीगृह के प्रमुख दोष, सुधार के उपाय, मध्य प्रदेश में बन्दीगृह, बन्दीगृहों का वर्गीकरण, बन्दीगृहों की क्षमता, कैदियों का वर्गीकरण, अभियोग परीक्षा वाले कैदी, खुले बन्दीगृहो की विशेषताएँ, भारत में खुले बन्दीगृह

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

जनजातीय समाजशास्त्रा
(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड (1)

अध्याय- 1 जनजाति की अवधरणा

जनजाति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, अनुसूचित जनजातियाँ, जनजातीय समाज की विशेषताएँ, जनजाति एवं जाति, भारतीय जनजातियों का परिचय, जनजातीय जनसंख्या, जनजातीय साक्षरता, प्रजातीय वर्गीकरण, भाषायी वर्गीकरण, संस्कृतिक वर्गीकरण,

अध्याय- 2 जनजातीय समाजशास्त्र

जनजातीय समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाएँ, जनजातीय समाजशास्त्र की प्रकृति, जनजातीय समाजशास्त्र का क्षेत्र, जनजाति–जाति सातत्यक,

अध्याय- 3 अनुसूचित जनजाति के लिए संवैधानिक सुरक्षा, जनजातीय नीतियाँ, विकास तथा कल्याण कार्यक्रम

अनुसूचित जनजातियों के लिए संवैधनिक प्रावधान, अनुसूचित जनजाति के विकास से सम्बन्धित प्रावधान, अनुसूचित क्षेत्रों तथा जनजातीय क्षेत्रों का प्रशासन, अनुसूचित क्षेत्रो का प्रशासन, जनजातीय क्षेत्र, जनजातीय क्षेत्रों की प्रमुख विशेषताएँ, जिला क्षेत्रीय परिषदों का संस्थापन, भू–राजस्व निर्धारण तथा संग्रह एवं करारोपण की शक्तियाँ, जनजातीय नीतियाँ, सात्मीकरण, एकीकरण, जनजाति विकास की योजनाएँ तथा कार्यक्रम,

अध्याय- 4 जनजातीय लोगों का वर्गीकरण

आजीविका के साधनों का विकास प्राचीन ढंग से संचय एवं शिकार करना, शिकार और शिकार के तरीके, शिकारियों का सामाजिक जीवन, आधुनिक शिकार, वन वस्तुओं का संचय, लकड़ी काटने का उद्योग, लकड़ी काटने वालों का सामाजिक जीवन, मछली पकड़ना, कृषि एवं उसके प्रकार, आधुनिक हल द्वारा कृषि एवं उसके प्रकार, मानव की पौधा पर विजय, कृषि का उद्भव एवं विकास।

अध्याय- 5 भारतीय जनजातियों का भौगोलिक, भाषायी वर्गीकरण एवं आर्थिक विभाजन

भारतीय जनजातियों का भौगोलिक वर्गीकरण, भारत की जनजातियों का भाषा के आधार पर वर्गीकरण, आर्थिक आधार पर जनजातियों का वर्गीकरण, भारतीय जनजातीय अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधर पर जनजातियों का वर्गीकरण

खण्ड (2)

अध्याय- 6 सामाजिक–संस्कृतिक रूपरेखा

संस्कृति का अर्थ, संस्कृति की विशेषताएँ, संस्कृति के अंग, सांस्कृतिक तत्व की विशेषताएँ, संस्कृतिक वृद्धि और परिवर्तन की प्रक्रियाएँ, सभ्यता एवं संस्कृति, संस्कृति एक उपकरण तथा विकास में बाधाएँ, मानव की आवश्यकताएँ तथा उससे संदर्भित सांस्कृतिक विकास की अपेक्षाएँ, विकास और परम्पराओं की विस्थापनीयता, विकास के प्रति जागरूकता का अभाव

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय- 7 परिवार एवं विवाह

परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, परिवार की विशेषताएँ, भारत में परिवार के प्रकार, भारतीय परिवार के प्रमुख कार्य, भारतीय परिवार की विशेषताएँ, संयुक्त परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, संयुक्त परिवार की विशेषताएँ, संयुक्त परिवार की रचना, संयुक्त परिवार के कार्य, भारतीय संयुक्त परिवार की संरचना, संयुक्त परिवार के गुण, संयुक्त परिवार के दोष, हिन्दू विवाह की अवधारणा, हिन्दू विवाह का अर्थ एवं परिभाषा, हिन्दू विवाह के उद्देश्य, हिन्दू विवाह की प्रकृति एवं विशेषताएँ, विवाह के भेद, विवाह की विधियाँ या स्वरूप, हिन्दू विवाह के नियम, हिन्दू विवाह का बदलता स्वरूप, मुसलमानों में विवाह, मुस्लिम विवाह की विशेषताएँ, ईसाईयों में विवाह, ईसाई विवाह में आधुनिक परिवर्तन

अध्याय- 8 नातेदारी

नातेदारी का अर्थ एवं परिभाषाएँ, नातेदारी के प्रकार, नातेदारी की श्रेणियाँ, नातेदारी की रीतियाँ, निकटाभिगमन, निकटाभिगमन के कारण परिहास के सम्बन्ध, परिहास के सम्बन्धें के कारण, माध्यमिक संबोधन, माध्यमिक संबोधन के कारण, प्रथा की मनोवैज्ञानिक व्याख्या, नातेदारी का महत्व।

खण्ड (3)

अध्याय- 9 सामाजिक गतिशीलता

सामाजिक गतिशीलता की परिभाषा, सामाजिक गतिशीलता की विशेषताएँ, सोरोकिन का योगदान, उदग्र गतिशीलता के सामान्य सिद्धांत, उदग्र गतिशीलता के स्त्रोत

अध्याय- 10 जनजातीय विकास

विभिन्न योजनाकाल में जनजातीय विकास, जनजातीय उपयोजना की अवधरणा, मध्यप्रदेश का जनजातीय उपयोजना क्षेत्र, आदिवासी उपयोजना काल में विकास, आर्थिक उन्नयन के कार्यक्रम, स्वास्थ्य एवं अन्य कार्यक्रम, उपलब्धियों का मूल्यांकन, आदिवासी उपयोजना क्षेत्र के विकास का स्तर, आदिवासी विकास का क्षेत्रीय स्वरूप

अध्याय- 11 जनजातीय आन्दोलन

जनजातीय आन्दोलन का अर्थ एवं परिभाषाएँ, आन्दोलन की विशेषताएँ, आन्दोलन के कारण एवं सहायक दशाएँ, भारतीय जनजातियों में आन्दोलन, मध्य भारत की अन्य जातियों में आन्दोलन, छत्तीसगढ में जनजातीय आन्दोलन, राष्ट्रीय चेतना का अभ्युदय, पृथक राज्य

खण्ड (4)

अध्याय- 12 जनजातियों की समस्याएँ

जनजाति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, जनजाति की विशेषताएँ, जनजातियों की समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, संस्कृतिक समस्याएँ, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ, शिक्षा सम्बन्धी समस्याएँ, सामाजिक समस्याएँ, राजनैतिक समस्याएँ, जनजातियों की समस्याओं के समाधन हेतु उपाय या सुझाव

अध्याय- 13 जनजातीय समस्याएँः निर्धनता, ऋणग्रस्तता एवं भूमि पृथक्करण

जनजातीय समस्याओं के कारण, वन्यजातीय समस्याएँ, वन्यजातीय समस्याओं का निराकरण, भारत में वन्यजातीय कल्याण, निर्धनता,)णग्रस्तता एवं भूमि पृथक्करण,

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

निर्धनता, निर्धनता के परिणाम, ऋणग्रस्तता , ऋणग्रस्तता के कारण, ऋणग्रस्तता के परिणाम, भूमि पृथक्करण, भूमि पृथक्करण के कारण, जनजातीय एवं कृषक समाज, कृषक समाज एवं जनजातीय समाज में समानताएँ, कृषक एवं जनजातीय समाजों में भिन्नताएँ, कृषक एवं जनजातीय समाजों में सहसम्बन्ध

अध्याय- 14 जनजातियों की समस्याएँ (छ.ग. राज्य के सन्दर्भ में)

भारत की राज्यवार अनुसूचित जनजाति जनसंख्या, छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जाति एवं जनजाति की संख्या, छत्तीसगढ़ की जनजातियों की सामान्य विशेषताएँ, छत्तीसगढ़ में जनजातीय समस्याएँ, छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियाँ

अध्याय- 15 आदिवासी आर्थिक व्यवस्था

अर्थव्यवस्था का अर्थ एवं परिभाषाएँ, आदिम अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ, आदिम अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण, आर्थिक विकास के प्रमुख स्तर, आदिम समाजों में अर्थव्यवस्था की कार्य प्रणाली, आदिम अर्थव्यवस्था में सम्पत्ति, सम्पत्ति का स्वामित्व : आदिम साम्यवाद, भारतीय जनजातियों का आर्थिक संगठन, खडिया जनजाति का आर्थिक जीवन, कूकी जनजाति का आर्थिक जीवन

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

बी. ए. अन्तिम वर्ष
समाजशास्त्रीय विचारों के आधार
(प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड (1)

अध्याय 1 : समाजशास्त्र का उद्‌भव

सामाजिक चिन्तन क्या है, प्राचीन सामाजिक दर्शन, भारत में सामाजिक दर्शन, यूरोप में सामाजिक दर्शन, यूरोप में पुनर्जागरण, इटली में पुनर्जागरण, जर्मनी में पुनर्जागरण, फ्रॉन्स में पुनर्जागरण, इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण, यूरोप में वैज्ञानिक चिन्तन का आरम्भ, समाजशास्त्र की ओर संक्रमण

अध्याय 2 : आगस्त कॉम्ट

कॉम्ट का जीवन परिचय, कॉम्ट की रचनाएँ, समाजशास्त्र को कॉम्ट की देन, समाजशास्त्र की अवधारणा, समाजशास्त्र की विशेषताएँ, समाजशास्त्र की शाखाएँ, प्रत्यक्षवाद का अर्थ, प्रत्यक्षवाद की विशेषताएँ।

अध्याय 3 : हरबर्ट स्पेन्सर

जीवन परिचय तथा कृतियाँ, सामाजिक डार्विनवाद, उद्‌विकास का अर्थ, सामाजिक उद्‌विकास, भौतिक उद्‌विकास का नियम, आलोचनात्मक मूल्यांकन

खण्ड (2)

अध्याय 4 : इमाइल दुर्खीम : सामाजिक एकता

दुर्खीम का जीवन परिचय, दुर्खीम की कृतियाँ, समाजशास्त्र के लिए दुर्खीम का योगदान, सामाजिक एकता का सिद्धान्त, सामाजिक एकता की अवधारणा, यांत्रिक एकता, यांत्रिक एकता की विशेषताएँ, सावयवी एकता, यात्रिक तथा सावयवी एकता में अन्तर।

अध्याय 5 : दुर्खीम : आत्महत्या

आत्महत्या की परिभाषा, आत्महत्या की विशेषताएँ, आत्महत्या के कारण, सामाजिक क्रियाः एक वास्तविक आधार, आत्महत्या के प्रकार, परार्थवादी आत्महत्या, अहंकारी और परार्थवादी आत्महत्या में अन्तर, आत्महत्या की सामाजिक प्रकृति, आत्महत्या के निवारण के उपाय, दुर्खीम के आत्महत्या सिद्धान्त की समालोचना।

अध्याय 6 : मैक्स वेबर

जीवन–परिचय एवं बौद्धिक पृष्ठभूमि, वेबर की प्रमुख कृतियाँ, शक्ति एवं सत्ता, सत्ता के प्रकार, सत्ता की ऐतिहासिक विवेचना, आदर्श प्रारूप, आदर्श प्रारूप की विशेषताएँ, आदर्श प्रारूप के प्रकार्य।

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

खण्ड (3)

अध्याय 7 : कार्ल मार्क्स

मार्क्स का जीवन परिचय, मार्क्स की प्रमुख रचनाएँ, ऐतिहासिक भौतिकवाद, उत्पादन सम्बन्धों का अर्थ, उत्पादन सम्बन्धों की विशेषताएँ, वर्ग और वर्ग संघर्ष, वर्ग चेतना, सामाजिक क्रान्ति, सामाजिक क्रान्ति की विशेषताएँ, सामाजिक क्रान्ति के सिद्धांत की आलोचना।

अध्याय 8 : विलप्रेफडो परेटो

परेटो की जीवनी, परेटो की कृतियाँ, परेटो का पद्धतिशास्त्र, समाजशास्त्र एक समन्वयात्मक, तार्किक एवं अतार्किक क्रियाएँ, परेटो की अवशेषों की अवधारणा, अवशेषों के प्रकार, अवशेषों का महत्व, भ्रान्त तर्को की अवधारणा, भ्रान्त तर्कों के प्रकार, अभिजात वर्ग का सिद्धांत, अभिजात वर्ग का परिभ्रमण

खण्ड (4)

अध्याय 9 : भारत में समाजशास्त्रीय चिन्तन का विकास

अनौपचारिक स्थापना का युग, समाजशास्त्रीय चिन्तन के उदय का युग, व्यापक प्रसार का युग, औपचारिक स्थापना युग, भारत में समाजशास्त्र के विकास और प्रवृत्तियाँ, क्या एक भारतीय समाज सम्भव है ?

अध्याय 10 : महात्मा गाँधी

जीवन परिचय, गाँधीजी के दर्शन की पृष्ठभूमि, गाँधीवाद, सत्य और अहिंसा, सत्याग्रह, गाँधीजी का आदर्श समाज, आर्य समाज, धार्मिक समाज, समाज में दयानन्द सरस्वती की भूमिका, वैदिक विचारधारा की पुनः स्थापना, मूर्ति पूजा का विरोध, बाल–विवाहों का विरोध, आलोचनात्मक मूल्यांकन

अध्याय 11 : राधा कमल मुखर्जी

जीवन चरित्र एवं रचनाएँ, समाज एक मुक्त व्यवस्था, सामाजिक मूल्य : अर्थ एवं परिभाषाएँ, मूल्यों का सोपान स्तर, मूल्यों का वर्गीकरण, मूल्यों का महत्व, अपमूल्यों की अवधारणा, प्रादेशिक समाजशास्त्र, सामाजिक पुनर्निमाण

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

सामाजिक अनुसंधन पद्धति
(द्वितीय-प्रश्नपत्र)

खण्ड (1)

अध्याय- 1 सामाजिक अनुसंन्धन का अर्थ एवं उपयोगिता

सामाजिक अनुसंन्धान का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक अनुसंन्धान की विशेषताएँ, सामाजिक अनुसंन्धान के उद्देश्य, सामाजिक अनुसंन्धान की प्रकृति, सामाजिक अनुसंन्धान की वैज्ञानिक प्रकृति, सामाजिक अनुसंन्धान की प्रक्रिया, सामाजिक अनुसंन्धान के प्रेरक तत्व, सामाजिक अनुसंन्धान की उपयोगिता एवं महत्व, सामाजिक अनुसंन्धान की कठिनाइयाँ, प्राकृतिक विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के परिणाम, सामाजिक अनुसंन्धान के प्रकार, परीक्षोपयोगी प्रश्न

अध्याय- 2 प्राक्कल्पना

प्राक्कल्पना का अर्थ तथा परिभाषाएँ, उपयोगी प्राक्कल्पना की विशेषताएँ, प्राक्कल्पना के स्त्रोत, प्राक्कल्पना के प्रकार, प्राक्कल्पना का महत्व, प्राक्कल्पना की सीमाएँ, प्राक्कल्पना के निर्माण में कठिनाइयाँ, परीक्षोपयोगी प्रश्न

अध्याय- 3 सामाजिक घटना का वैज्ञानिक अध्ययन

विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषाएँ, वैज्ञानिक पद्धति की प्रमुख विशेषताएँ, वैज्ञानिक पद्धति के प्रमुख चरण, सामाजिक घटना की प्रकृति की विशेषताएँ, सामाजिक घटना के वैज्ञानिक अध्ययन पर आपत्तियाँ एवं उनका समाधान, तर्क का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक अनुसंन्धानों में तर्क, अनुसंन्धान में तर्क का महत्व, आगमन पद्धति, आगमन पद्धति के दोष, निगमन पद्धति, निगमन पद्धति के गुण, निगमन पद्धति के दोष।

खण्ड (2)

अध्याय- 4 सामग्री के प्रकार एवं स्त्रोत

सामग्री का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामग्री के प्रकार, सामग्री के स्त्रोत, अवलोकन का अर्थ, अवलोकन की विशेषताएँ, अवलोकन की प्रक्रिया, अवलोकन के प्रकार, अवलोकन के गुण, अवलोकन की उपयोगिता, अवलोकन की विश्वसनीयता के उपाय, साक्षात्कार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, साक्षात्कार की विशेषताएँ, साक्षात्कार की प्रक्रिया, साक्षात्कार का प्रतिवेदन, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के प्रकार, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति की कार्यविधि, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का महत्व, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के दोष, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति में सावधानियाँ।

अध्याय- 5 सामाजिक अनुसंन्धन के प्रकार

अन्वेषणात्मक या निरूपणात्मक अनुसंन्धान, अन्वेषणात्मक अनुसंन्धान की कार्य प्रणाली, वर्णनात्मक अनुसंन्धान, वर्णनात्मक अनुसंन्धान की विशेषताएँ, वर्णनात्मक अनुसंन्धान के चरण, परीक्षणात्मक अनुसंन्धान, परीक्षणात्मक अनुसन्धान के प्रकार, विशुद्ध अनुसंन्धान, व्यवहारिक अनुसंन्धान, व्यवहारिक अनुसंन्धान की उपयोगिता, क्रियात्मक अनुसंन्धान, मूल्यांकनात्मक अनुसंन्धान, मूल्यांकनात्मक अनुसंन्धान की प्रक्रिया, मूल्यांकनात्मक अनुसंन्धान की समस्याएँ।

अध्याय- 6 सामाजिक सर्वेक्षण

सामाजिक सर्वेक्षण का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक सर्वेक्षण की प्रकृति एवं विशेषताएँ, सामाजिक सर्वेक्षण की विषयवस्तु, सामाजिक सर्वेक्षण के उद्देश्य, सामाजिक सर्वेक्षण की उपयोगिता, सर्वेक्षण विधि की सीमाएँ।

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय- 7 सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकार, आयोजन एवं प्रमुख चरण

सामाजिक सर्वेक्षण के तीन उप-प्रकारों वाले वर्गीकरण, सामाजिक सर्वेक्षण के द्वि-उप प्रकारों वाले वर्गीकरण, सामाजिक सर्वेक्षण का अयोजन एवं प्रमुख चरण, पूर्वगामी अध्ययन अथवा सर्वेक्षण, सामाजिक अनुसंन्धान एवं सामाजिक सर्वेक्षण, सामाजिक अनुसंन्धान तथा सामाजिक सर्वेक्षण में अन्तर, सामाजिक अनुसंन्धान एवं सामाजिक सर्वेक्षण में समानता।

खण्ड (3)

अध्याय- 8 प्रतिदर्श

समष्टि, प्रतिदर्श एवं इकाई, समष्टि, प्रतिदर्श, प्रतिदर्श इकाई, प्राचल आकलन तथा प्रतिदर्श चयन त्रुटि, प्रतिदर्श चयन की विधियाँ, निर्णयाधारित प्रतिदर्श चयन, प्रायकिता प्रतिदर्श चयन: यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन, यादृच्छिक प्रतिदर्श का आकार, प्रतिदर्श चयन वितरण, यादृच्छिक प्रतिदर्श के मध्यमानों का प्रतिदर्श चयन वितरण ।

अध्याय- 9 प्रश्नावली एवं अनुसूची

प्रश्नावली के प्रकार, प्रश्नावली की विशेषताएँ, प्रश्नावली की रचना, प्रश्नों की प्रकृति, प्रश्नावली का बाह्य तथा भौतिक पक्ष, प्रश्नावली का प्रयोग, प्रश्नावली की विश्वसनीयता, प्रश्नावली के गुण, प्रश्नावली की सीमाएँ, अनुसूची की प्रस्तावना, अनुसूचियों के प्रकार, अनुसूची निर्माण की प्रक्रिया, अनुसूची की अन्त:वस्तु, प्रश्नों की विशेषताएँ, अनुसूची द्वारा सूचना प्राप्त करना, अनुसूची का सम्पादन, अनुसूची के गुण, अनुसूची के दोष

अध्याय- 10 साक्षात्कार निर्देशिका

साक्षात्कार का अर्थ तथा परिभाषाएँ, साक्षात्कार के उद्देश्य, साक्षात्कार के विभिन्न प्रकार, साक्षात्कार की प्रक्रिया के चरण, साक्षात्कारकर्त्ता की भूमिका, साक्षात्कार के लाभ, साक्षात्कार के दोष

अध्याय- 11 साक्षात्कार निर्देशिका

बिन्दु रेखाओं के गुण, बिन्दु रेखाओं के दोष, बिन्दु रेखा रचना, आवृत्ति बिन्दु रेखा, कालिक चित्र, निरपेक्ष कालिक चित्र, आवृत्ति चित्र, आवृत्ति बहुभुज, परिमाणात्मक चित्र, एक परिणात्मक चित्र, दो परिणात्मक चित्र, पाई चार्ट या वृत्त चित्र ।

खण्ड (4)

अध्याय- 12 सांख्यिकीय माध्य, समान्तर माध्य, बहुलक तथा माध्यिका

माध्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ, माध्यों की उपयोगिता एवं उद्देश्य, एक आदर्श माध्य के आवश्यक तत्व, माध्यों की सीमाएँ, माध्यों के प्रकार, समान्तर माध्य, समान्तर माध्य की विशेषताएँ, समान्तर माध्य की गणना, समान्तर माध्य के दोष, बहुलक, बहुलक की विशेषताएँ, बहुलक की गणना, बहुलक के गुण, बहुलक के दोष, माध्यिका, माध्यिका की विशेषताएँ, माध्यिका का परिकलन, माध्यिका के गुण, माध्यिका के दोष, बहुलक, माध्यिका तथा समान्तर माध्य की तुलनात्मक उपयोगिता

अध्याय- 13 प्राथमिक तथा द्वितीयक तथ्य

तथ्यों के प्रकार, तथ्य संकलन के स्त्रोत, प्राथमिक स्त्रोतों के गुण, प्राथमिक स्त्रोतों के दोष, द्वितीयक तथ्यों के स्त्रोत, भारत में सरकारी आँकड़ों के स्त्रोत, तथ्यों के संकलन का महत्व ।

अध्याय- 14 सारणीयन

सारणीयन की परिभाषाएँ, सारणीयन के उद्देश्य, सारणीयन के लाभ, सारणीयन की सीमाएँ, उत्तम सारणी के लक्षण, सारणी का ढाँचा, सारणियों के प्रकार।

VERIFIED
REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur